31/8/20 (1)

क्रमशः —

B.A. Part I — डॉ० अनुपमा कुमार
Hindi Hons — हिन्दी विभाग
Paper I — एसोसिएट प्रोफेसर
मध्यकालीन हिंदी काव्य — हिंदी विभाग
एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद

सूर के पद - मधुबन तुम कत रहत हरे की व्याख्या

उत्तर: —

शब्दार्थ — प्रकृति के जो उपादान संयोग के समय सुखकर होते हैं वही वियोग के समय दुखकर हो जाते हैं। वियोग में मधुबन का हरा-भरा होना गोपियों को कष्टकर प्रतीत हो रहा है।

छाँड़ि क्यों न जरे — इसमें लोकोक्ति है। लोक जीवन में इसका सदा प्रयोग होता है।

बेनु — कृष्ण बेनु बजाते थे। बेनु का अर्थ होता है — ब + इ + नु जिसका सुनने के सामने ब्रह्म स्वरूप और ध्वनि का स्वरूप जागना हो उसे बेनु कहते हैं।

मोहे ग्वाल — इस पंक्ति में मुरली के प्रभाव का वर्णन है जब कृष्ण मुरली बजाते थे तब विस्मयकारी प्रभाव होता था। जड़, चेतन सभी मुरली की धुन सुनकर मोहित हो जाते थे।

यह पिय बिन — वाली पंक्ति में मधुबन को बीते दिनों की सुखकर स्मृति कराई जा रही है।

पाठान्तर — कहीं-कहीं यह पाठ भी मिलता है — कौन काज ठाढ़े रहे बन में काहे न उकठि परे। ससा स्यार और बन के पखेरू धिक-धिक सबन करे।

क्रमशः —

21/8/20 (2)

कक्षा: B.A. I Part Hons

निम्न प्रश्नों के उत्तर बताइए।
वस्तुनिष्ठ प्रश्न – 1x10 = 10

B.A. I Part Hindi Hons

(1) प्रस्तुत पद में गोपियाँ किसके सुन्दर नयनों को कहती हैं।
(2) कृष्ण क्या बजाते थे।
(3) प्रस्तुत पद में किसकी व्यथा का वर्णन है।
(4) गोपियाँ बादल में शिवधनुष किसे समान को कहती है।
(5) प्रकृति के जो उपादान संयोग के कारण सुखकर होते हैं वे वियोग के कारण क्या हो जाते हैं।
(6) मुरली बजाने पर उसका प्रभाव कैसा होता था।
(7) कृष्ण कहाँ मुरली बजाते थे।
(8) मोहे व्याधा बोली पंक्ति में किसके प्रभाव का वर्णन है।
(9) मुरली बजाने पर गायों का ध्यान क्या होता था।
(10) प्रस्तुत पद के कवि कौन हैं।